IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

समकालीन कला में कला और कलाकार की स्थिति – एक अध्ययन

अनु देवी, शोध छात्रा

चौ0चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ व प्रवक्ता, ललित कला विभाग, श्रीराम कॉलेज, मुजफ्फरनगर।

डॉ0 वन्दना वर्मा, शोध निर्देशिका

एसोसिएट प्रोफेसर, चित्रकला विभाग, जैन कन्या (पी0जी0) कॉलेज, मुजफ्फरनगर

संक्षेप

समकालीन कला एक सांस्कृतिक संवाद का हिस्सा है जो व्यक्तिगत और सांस्कृतिक पहचान, परिवार, समुदाय और राष्ट्रीयता जैसे बड़े संदर्भ ढांचे की चिंता करता है। कलात्मक अभ्यास के अलावा, समकालीन कला में कला आलोचना ओर सिद्धान्त, कला शिक्षा अपने शिक्षण संस्थानों और कला स्कूलों, क्यूरेटरशिप, समकालीन कला प्रकाशनों, मीडिया और मीडिया, सार्वजनिक और निजी संग्रह, दीर्घाओं और मेलों जैसे क्षेत्र शामिल हैं। कला और साहित्य का महत्व उनकी अद्वितीयता और सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण में भी है, जो समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण हैं। इसके साथ ही, यह व्यक्ति के मानसिक और आत्मिक विकास में भी मद्द करता है और समाज को सुन्दरता और सोचने की क्षमता का अनन्द देता है। समकालीन कला का जन्म वैज्ञानिक विचारधारा से हुआ है, और इसमें प्रयोगवादी दृष्टिकोण है जिसके फलस्वरूप आधुनिक चित्रकला का स्वरूप विभिन्न प्रारूपों में उपस्थित हो सका है। किन्तु इसमें प्रयोगवादी प्रक्रिया किसी निश्चित खोज को स्थापित नहीं कर पाई है। इसके कारण इसका कोई निश्चित स्वरूप अभी प्रकट नहीं हो सका है।

प्रमुख शब्द : समकालीन कला, कलाकार, अभिव्यक्ति।

प्रस्तावना

समकालीन कला वर्तमान की कला है, जो इक्कीसवीं सदी में निर्मित होती है। समकालीन कलाकार विश्व स्तर पर प्रभावित, सांस्कृतिक रूप से विविध और तकनीकि रूप से विश्व में कला को आगे बढ़ाने का काम करते हैं। उनकी कला सामग्री, विधियों, अवधारणाओं और विषयों का एक गतिशील संयोजन है जो उन सीमाओं की चुनौती को जारी रखते हैं जो 20वीं शताब्दी में पहले से ही चल रहे थे। समकालीन कला एक सांस्कृतिक संवाद का हिस्सा है जो व्यक्तिगत और सांस्कृतिक पहचान, परिवार, समुदाय और राष्ट्रीयता जैसे बड़े संदर्भ ढांचे की चिंता करता है।

कलात्मक अभ्यास के अलावा, समकालीन कला में कला आलोचना ओर सिद्धान्त, कला शिक्षा अपने शिक्षण संस्थानों और कला स्कूलों, क्यूरेटरशिप, समकालीन कला प्रकाशनों, मीडिया और मीडिया, सार्वजनिक और निजी संग्रह, दीर्घाओं और मेलों जैसे क्षेत्र शामिल हैं। समकालीन कला बाजार, समकालीन कला उत्पादन उद्योग और कला के समकालीन कार्यों को प्रदर्शित, संरक्षित और प्रलेखित किया जाता है। कला और साहित्य का महत्व उनकी अद्वितीयता और सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण में भी है, जो समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण हैं। इसके साथ ही,

यह व्यक्ति के मानसिक और आत्मिक विकास में भी मद्द करता है और समाज को सुन्दरता और सोचने की क्षमता का अनन्द देता है।

विश्व में कला और साहित्य का महत्व अत्यधिक है, यह कला केन्द्रीय संगठनों और आयोजनों के माध्यम से प्रमोट की जाती है ताकि लोग इस क्षेत्र में रूचि बनाये रखें। भारत में 'राष्ट्रीय ललित कला अकादमी' इस कार्य को संचालित करती है, इसका उद्देश्य मूर्तिकला, चित्रकला, ग्राफिक्स और गृहनिर्माण कला के क्षेत्र में योगदान करना है, साथ ही यह भारतीय कला के प्रसार प्रचार ओर विदेशों में भी जागरूकता बढ़ाने में भी सहायता करती है।

कला का अर्थ

"मनुष्य की रचना, जो उसके जीवन में आनन्द प्रदान करती है, कला कहलाती है।" भारतीय कला एक 'दर्शन' है। शास्त्रों के अध्ययन से पता चलता है कि सर्वप्रथम 'कला' शब्द का प्रयोग 'ऋग्वेद' में हुआ था, "यथा कला, यथा शफ, मध, शृण स नियामति" व कला शब्द का यर्थाथवादी प्रयोग 'भरत मुनि' ने अपने 'नाट्यशास्त्र' में प्रथम शताब्दी में किया – "न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न साविधा–न सा कला।" अर्थात् ऐसा कोई ज्ञान नहीं, जिसमें कोई शिल्प नहीं, कोई विधा नहीं, जो कला न हो। भरत मुनि, ज्ञान, शिल्प और विधा से भी अलग 'कला' का क्या अभिप्राय ग्रहण करते थे, यह कहना कठिन है? अनुमान यहीं लगता है कि भरत के द्वारा प्रयुक्त 'कला' शब्द यहां 'ललित कला' के निकट है और 'शिल्प' शायद उपयोगी कला के लिए। हमारे यहाँ कला उन सारी जानकारियों या क्रियाओं को कहते हैं, जिसमें थोड़ी सी भी चतुराई की आवश्यकता है।

समकालीन कला में कला और कलाकार की स्थिति

कला में समकालीनता के अर्थ को समझने के लिए पहले "समकालीनता" पर विचार करना होगा। इस शब्द का अर्थ है 'एक ही समय में समय के साथ' या 'समय के साथ चलते हुए। पहले जिस कला संदर्भ के लिए "आधुनिक कला" शब्द का प्रयोग किया जाता था। उसी कला संदर्भ के लिए अब "समकालीन कला" शब्द का प्रयोग होता है। इन दोनों का शाब्दिक रूप से अर्थ अलग है परन्तु पारिभाषिक रूप से अर्थ लगभग समान है। आधुनिक कला आन्दोलन के बाद की सृजनात्मक कला को परिभाषित करने के लिए "आधुनिक कला" शब्द का प्रयोग 5 दशकों तक किया गया। परन्तु इस शब्द से सन्तुष्ट न होकर हर काल की आधुनिकता को समय के साथ देखने का प्रयास जारी हुआ और अब समकालीन कला शब्द का प्रयोग कला के उन्हीं संदर्भों के लिए हो रहा है, किन्तु यह शब्द भी कहीं–कहीं सार्थक नहीं हो रहा है, इसलिये अपनी बातों को कहने के लिये कुछ विद्वान "आज की कला" शब्द का व्यवहार करने लगे हैं। समकालीन कला का तात्पर्य उस कला से है जो वर्तमान में एक विशेष आन्दोलन से जुड़ा है और प्राचीन परम्पराओं और रूचि के अनुसार निरन्तर नये–नये प्रयोग हो रहे हैं। कला अभिव्यक्ति, मनोवैज्ञानिक, प्रतीकात्मक तथा जटिल होती जा रही है। समकालीन कलाकारों के लिये कोई भी विषय भारतीय समाज की जटिलतायें, कुण्ठाये आदि अछुती नहीं हैं। अगर संघर्षरत नये कलाकार की कृतियों पर नजर डालते हैं तो ये विसंगतियां पूरी जटिलता के साथ उनके चित्रों में दिखाई पड़ती हैं। समकालीन कलाकार व्यक्ति तथा समाज की भावनाओं को आत्मसात कर गहन खोज में लगा हुआ है।

समकालीन कला का अर्थ है कि वो कला जो आज के समय में बनाई जाती हैं और उसका योगदान आज के समय की सोच ओर परिपेक्ष्य में होता है। इसका मतलब है कि समकालीन कला हमारे वर्तमान समय की सामाजिक, राजनीतिक और प्रातिकृतिक स्थितियों को दर्शाने का प्रयास करती है।

समय और परिस्थिति अनुसार प्रत्येक व्यक्ति के लिए समकालीनता का अर्थ अलग हो सकता है। कोई इसे अबस्ट्रैक्ट कला के रूप में मान सकता है, जबकि कोई इसे नई प्रौद्योगिकी के माध्यम के रूप में देख सकता हैं। समकालीन कला में कलाकार को अपनी स्वतन्त्रता बनाये रखने की स्वाधीनता है।

समकालीन कला कई कला आन्दोलनों और शैलियों का प्रतिनिधित्व करती है। इसमें विषय और माध्यम की सीमाएं टूट चुकी हैं, और कलाकार अधिक व्यक्तिगत और स्वतन्त्र होते हैं। समकालीन कलाकार विज्ञान, तकनीक, कम्प्यूटर, संचार माध्यमों ओर अन्य डिजिटल उपकरणों का उपयोग करते हैं। इसके अतिरिक्त समकालीन कला के लिए समसामयिक कला का ज्ञान आवश्यक है, कलाकार की आत्मिक अनुभूति के अलावा विशुद्धता का कोई मापदण्ड नहीं होता, क्योंकि यह समय के साथ बदलती रहती है।

समकालीन कला की प्रमुख कलाधाराएँ

कलाकार वस्तु के बाह्य रूप के सादृश्य से प्रतीकात्मक दर्शन को अधिक पसन्द करता है। वह अपनी कलाकृति को सामाजिक महत्व के निर्मित मानने के बजाय आन्तरिक आवश्यकता की पूर्ति मानता है।

कलाकृति का मूल्यांकन या रसग्रहण करते समय उसके सौन्दर्यात्मक गुणों का विचार करता है। इसके परिणामस्वरूप, समकालीन कला समय के साथ बदलती रहती है और विभिन्न दृष्टिकोणों से देखी जा सकती है। यह कला की एक नई और उत्कृष्ट रूप को प्रकट करती है, जो हमारे समय की जीवनशैली और तकनीकि उन्नति का परिचायक होता है।

कला, कला के आन्तरिक गुणों का प्रत्यक्षीकरण करती है, बाह्य रूप का नहीं। इस दृष्टि से कलाकार की तुलना रहस्यानुभवी से की जा सकती है। सृजन आत्मा और विषयवस्तु के काल्पनिक संयोग का परिणाम है। विषय वस्तु के सार तत्वों की अभिव्यक्ति तभी सम्भव है जब कलाकार उसके साथ पूरी तरह तदात्म्य स्थापित कर लेता हैं। आन्तरिक सत्य को पूरी तरह से आत्मसात कर लेता है। समकालीन कलाकारों ने इसी आन्तरिक रहस्य और चेतना शक्ति को पहचानने और उसे अपने निजी प्रयोगों में अभिव्यक्त करने की कोशिश की है, समकालीन कलाकारों ने आन्तरिक चक्षुओं द्वारा वस्तु के स्वभाव को आत्मसात करते हुए स्वयं को स्वतन्त्र कर लिया। अब वह प्रकृति की नकल नहीं करता और न ही उसे वस्तु के साम्य से कोई लगाव रखता है। प्रकृति कलाकार के अनुभव की वस्तु बन जाती है, वस्तु के मूल तत्वों द्वारा आकार का सृजन ही समकालीन कला की मूल रचना पद्धति है। जिसके द्वारा वह वस्तु का चित्रात्मक प्रत्यक्षीकरण करता है। वह न केवल विषय वस्तु के चाक्षुष स्वभाव को निश्चित करता है बल्कि रंग,रूप, धरातल और उभार आदि सभी चाक्षुष गुणों को निर्दिष्ट करते हुए नई दिशा, नये भाव और नये विचार प्रदान करता है। इसी सन्दर्भ में प्रसिद्ध चित्रकार "पाल क्ले" ने विचार और भाव को प्रधानता देते हुए कहा है कि – "प्रत्यक्ष अभिप्राय से उत्पन्न रूपाकारों की समस्त चेतना शक्ति, ब्रश द्वारा ही अभिव्यक्त होती है। ब्रश के प्रत्येक आघात में कलाकार का स्पर्श होता है, और हर आघात का अपना निजी स्वभाव होता है आघातों का पारस्परिक प्रभाव तथा उनके बीच का अन्तराल जिन तत्वों की सृष्टि करता है

उनके घनत्व, शून्यत्व और गति में सन्तुलन बनाये रखना अति आवश्यक है। समकालीन कलाकार खुद को पहचानने में इतने अधीर हैं कि वह किसी भी वातावरण से समझौता नहीं करना चाहते। कला का कार्यक्षेत्र केवल यहां तक ही सीमित नहीं होता, बल्कि उसमें अगले एक्सप्रेशन का अन्तिकण मिलता है। यही कारण है कि समकालीन कला के क्षेत्र में असाधारण रचनाकार उत्पन्न होते हैं।"

कला का महत्व विभिन्न हो सकता है, इसका मतलब है कि लोगों के लिए कला का महत्व अलग–अलग हो सकता है। कुछ लोग कला को अपने जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा मानते हैं, क्योंकि वे इसे अपनी रूचि और स्वतन्त्रता का माध्यम मानते हैं, जबकि कुछ लोग इसे केवल मनोरंजन और मनोबल की उन्नति के लिए देखते हैं। कला का महत्व भी समाज और समय के साथ बदल सकता है, और व्यक्ति के परिपर्णता, शिक्षा और व्यक्तिगत रूप में उनकी रूचियों और मूल्यों पर निर्भर कर सकता है।

कला की रूचि एक व्यक्ति के व्यक्तिगत पसन्दों और रूचियों पर निर्भर करती है। कुछ लोग चित्रकला, संगीत, नृत्य अथवा अन्य कलाओं के प्रति अधिक रूचि रखते हैं, जबकि कुछ लोग फिल्म, थिएटर या अन्य कलाओं में रूचि रखते हैं। यह रूचियां व्यक्ति के व्यक्तिगत विकास का हिस्सा हो सकती हैं और उनके जीवन को सर्वांगीण रूप से प्रभावित कर सकती हैं। कला का प्रयोग व्यक्तिगत समृद्धि के लिए किया जा सकता है, और यह मनोबल और सांस्कृतिक समृद्धि का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत भी हो सकता है।

कला का महत्व यह भी है कि यह समाज को सोचने ओर विचार करने का तरीका प्रदान करती है। कला के माध्यम से, लोग सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक मुद्दों को बयां करते हैं और विचार करते हैं, जिससे समाज में सकारात्मक परिवर्तन हो सकता है। कला के माध्यम से लोग अपने जीवन को साझा करते हैं और सामाजिक वाद–विवाद को समझने का और उसका समाधान करने का एक माध्यम ढूँढते हैं।

समागम और कला

समागम और कला के साथ सभी मानव समुदायों का एक गहरा सम्बन्ध है, और कला एक माध्यम के रूप में लोगों की भावनाओं, विचारों और अनुभवनों को साझा करने का तरीका प्रदान करती है। इसके अलावा, कला, कला के माध्यम से अनुशासन, सृजनात्मकता और नवाचार की प्रोत्साहना कर सकती है, जो व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर समृद्धि के प्रमुख उपाय हो सकते हैं।

कुल मिलाकर, कला का महत्व व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर अद्वितीय होता है, और यह समृद्धि, सांस्कृतिक विविधता और समाज में सकारात्मक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत हो सकता है। समकालीन कला का जन्म वैज्ञानिक विचारधारा से हुआ है, और इसमें प्रयोगवादी दृष्टिकोण है जिसके फलस्वरूप आधुनिक चित्रकला का स्वरूप विभिन्न प्रारूपों में उपस्थित हो सका है। किन्तु इसमें प्रयोगवादी प्रक्रिया किसी निश्चित खोज को स्थापित नहीं कर पाई है। इसके कारण इसका कोई निश्चित स्वरूप अभी प्रकट नहीं हो सका है।

अगर हम भारतीय चित्रकला का स्वरूप दर्शाना चाहें, तो हम यहीं कहेंगे कि भारतीय चित्रकला "कुछ–कुछ पाश्चात्य और अधिकतम नवीन प्रयोगवादी है। भारत में पाश्चात्य शैली के आगमन के बाद हम देखते हैं कि भारत में नवीन प्रयोगवादी दृष्टिकोण से निम्नलिखित शैलियों का विकास मुख्य रूप से हुआ"

(1) अभिव्यंजनात्मक शैली

इस शैली को सरल रूप में नहीं दर्शाया जा सकता है क्योंकि यह एक अभिव्यंजनात्मक शैली है, जिसमें विभिन्न तरीकों से और अलग–अलग कला साधनों का प्रयोग किया जाता है ताकि व्यक्ति अपनी भावनाओं, रहस्यों और अनुभूतियों को अभिव्यक्त कर सके। इस शैली के कलाकार रंग, रेखाएं, आकृति, विकृतिकरण और अन्य तकनीकि का सहारा लेते हैं ताकि वे अपनी रचनाओं में भावनाओं को और भी गहराई से व्यक्त कर सकें।

इस शैली का प्रयोग भारतीय कलाकारों ने कम किया है, लेकिन कुछ कलाकारों ने इसे अपनाया है और मानवता के साथ जोड़ते हैं, जिससे वे दर्शकों को गहरा प्रभाव छोड़ सकते हैं। इस शैली का प्रयोग कला की नई दिशाओं में जाने का एक माध्यम भी हो सकता है।

(2) यथार्थवाद शैली

"यथार्थवाद" कला का अर्थ है कि चित्र वास्तविकता के रूप में दिखाने का प्रयास करता है, जैसे कि वस्तुओं को हम नगरों से देखते हैं, और उसे चित्रित करने का प्रयास करता है। इस शैली का प्रयोग पश्चिमी कला में अधिक होता है, और इस शैली के भारत आगमन के बाद भारतीय चित्रकला पर पाश्चात्य कला का प्रभाव सबसे पहले इसी यथार्थवाद कला से होता है। आजकल यह यथार्थवाद कला भारतीय चित्रकला का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है, और चित्रकला की शिक्षा का आरम्भ इसी शैली से होता है।

(3) घनवादी शैली

"घनवादी शैली" का अर्थ होता है वह कला शैली जिसमें चित्रकारी कला का ध्यान छः समान आकृतियों वाले ठोस पदार्थों पर रखा जाता है। यह एक नवाचारी कला शैली जिसमें आकृति के सभी अंग प्रत्येक ज्यामितीय आकारों में विभक्त करके चित्रित किए जाते हैं। आजकल भारत में इस शैली का काफी प्रचलन है। इसमें चित्रों में परिप्रेक्ष्य के स्थान पर घनत्व को अधिक महत्व दिया जाता है। घनवादी चित्रकारों की आकृतियों में शक्ति सौन्दर्य और वक्र रेखाओं का विशेष प्रयोग होता है।

(4) कोलाज

"कोलाज" बनाना दादावादी प्रवृति से आरम्भ हुआ था। इस प्रवृति में यूरोपीय कलाकारों ने समाज में व्याप्त बुराई को चित्रित किया। यह चित्रण व्यंग्यात्मक और प्रतीकात्मक था, जिससे इस प्रवृति के कलाकारों को पागल और सनकी कहा गया। हालांकि भारत में इस प्रवृति को सीधे नहीं अपनाया गया, वहीं "कोलाज" नामक एक शैली इसका प्रतिनिधित्व करती है। इस शैली में चित्रकार विभिन्न माध्यमों और तकनीकों का उपयोग करके चित्रण करता है। इन माध्यमों में शामिल हो सकते हैं अखबार, कागज के टुकड़े, लकड़ी, सींक, माचिस की तीली, रस्सी, कपड़ा, प्लास्टिक, कलपुर्जे या कोई भी बेकार का सामान आदि।

(5) जंगलवादी शैली

जंगलवादी शैली कला में एक विशेष धारा है, जिसमें रंगों को अधिक महत्व दिया जाता है। इस शैली के कला कर्मचारी आकृतियों को नहीं बल्कि रंगों के माध्यम से अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करते हैं। इस शैली के कलाकार आकृतियों को महत्व नहीं देते हैं। भारतीय चित्रकारों का इस शैली पर काफी प्रभाव पड़ा है।

इस शैली का इतिहास समकालीन कला के प्रयोगों पर आधारित है, जो आधुनिक कला की शुरूआत (20वीं शताब्दी की शुरूआत) के प्रयोगों पर आधारित है। इसमें कला को पारम्परिक और संस्थागत स्थानों से बाहर लाने की इच्छा है। इस शैली में कला नये और अनूठे तरीके से दिखाने का प्रयोस करती है और यह समाज के संकटों को दर्शाती है, मूल्यों की अभिव्यक्ति का स्थान बनाती है।

समकालीन कला

समकालीन कला आधुनिक विचारधाराओं के प्रयोगों पर आधाारित है, लेकिन आजकल यह शैली कुछ कमियों से गुजर रही है। यह कला आजकल नये व्यवहारों, कलात्मक मिश्रण और तकनीकी उन्नति के साथ आधुनिक विचारधाराओं के प्रति प्रतिबद्ध है। कलाकार वर्तमान में मीडिया टूल के रूप में कला का उपयोग करते हैं और नये दर्शकों को खींचते हैं। उत्तरआधुनिकता के विचार ने समकालीन कला में नई समस्याओं को तैयार किया है, जो वैचारिक धाराओं से मुक्त है, लेकिन कलाकारों को राजनीतिक या वैचारिक आलोचना करने से रोकते हैं।

समकालीन कला एक रोमांचक और नवाचारी शैली है, जो कला के माध्यम से समाज की समस्याओं का सामना करती है और नई दिशाओं में बदल जाती है। यह भी वास्तविता है कि समकालीन कला आधुनिक कला के प्रयोगों पर आधारित है। उत्तरआधुनिकता के विचार ने समकालीन कला में निहित अधिकांश समस्याओं को तैयार किया है, जो वैचारिक धाराओं (साम्यवाद और पूँजीवाद) से मुक्त हुए हैं, हालांकि, प्रतिबद्ध कलाकारों को राजनीतिक या वैचारिक कमियों की आलोचना करने से रोकते हैं। इसी प्रकार फ्रांस में, प्लास्टिक कला के संकायों का निर्माण ललित कलाओं के अकादमिक शिक्षण से लड़ने के लिए एक आधार बनाता है, यह कला शिक्षा, समाजशास्त्र, नृविज्ञान, सौंदर्यशास्त्र और अन्य के क्षेत्र के लिए पूर्व में विदेशी विषय और अपने हाल के विकास के साथ कलात्मक अनुसंधान का मार्गदर्शन करते हैं।

सौंदर्य के लिए औपचारिक खोज के बाद नए सौंदर्य अनुसंधान पथ हैं, जिनमें से सबसे अधिक कट्टरपंथी, वैचारिक कला, अतिसूक्ष्मवाद, प्रदर्शन, शरीरकला, कला के अर्थ और धारणा को स्थायी रूप से संशोधित करते हैं, जो कभी–कभी निर्विवाद रूप से पहली भ्रामक दृष्टि में बदल जाता है। माध्यम के प्रकारों का टूटना (पेंटिंग अक्सर प्रतिष्ठानों, प्रदर्शन या अन्य के पक्ष में छोड़ दिया जाता है) और कार्यों की सामग्री गहराई से कला मध्यस्थता के नेटवर्क को संशोधित करना है यह नई दिर्घाओं के अलावा, नई प्रदर्शनी संदर्भ और नए प्रसार मीडिया की उपस्थिति को दर्शाता है।

इसी सम्बन्ध में भारतीय कलाकार अवनीन्द्रनाथ ठाकुर ने एक नई कला शैली का निर्माण किया, जिसे 'बंगाल शैली' कहा गया। उन्होंने कलकत्ता कला विद्यालय में प्रधानाचार्य के पद पर रहते हुए ईरानी, चीनी, जापानी, मुगल, राजपूत और अजन्ता की शैलियों के समन्वय से इस नई कला शैली का निर्माण किया। उन्होनें चीन और जापान की कला पद्धतियों के अध्ययन का भी समावेश किया। इस 'बंगाल शैली' को 'पुनरूथान कला' या 'पुनर्जागरण कला' भी कहा जाता है।

अवनीन्द्रनाथ ठाकुर के अतिरिक्त, पुनर्जागरण कला के प्रमुख चित्रकारों में गगनेन्द्रनाथ ठाकुर, नन्दलाल बसु, असीत कुमार हल्दार, क्षितीन्द्रनाथा मजूमदार, देवीप्रसाद राय चौधरी, जामिनी राय, अब्दुर्रहमान चुगतई, ईश्वर प्रसाद, शैलेन्द्रनाथ डे और शारदा उकील आदि प्रसिद्ध थे। इन चित्रकारों ने पुनर्जागरण कला के माध्यम से भारतीय चित्रकला को नया जीवन प्रदान किया है। इसके बाद कला विद्यालयों ने अपनी नीतियों को निर्धारित किया और कला विद्यार्थियों को विभिन्न कला माध्यमों की शिक्षा प्रदान करने लगे। उन्होनें अपने पाठ्यक्रम को तत्कालीन आवश्यकताओं के अनुसार परिवर्तित किया और भारतीय शैली को अध्ययन में शामिल किया। इससे आधुनिक भारतीय कला का पुर्नरूथान काल आरम्भ हुआ और भारतीय चित्रकला के इतिहास में महत्वपूर्ण कदम बढ़ा।

वैभव भी भारतीय कला के युवा चेहरे आये हैं और उन्होने 'इन्डो–यूरो आधुनिक कला' का नया रूप बनाया है। वह भारतीय, यूरोपीय और अन्य विभिन्न कला माध्यमों में कला को विकसित किया जिस कारण भारतीय कला का भविष्य वैश्विक मंच पर है। इसी प्रकार, नन्दलाल बसु और एन.एस. बेन्द्रे जैसे कलाकारों ने भारतीय कला को आधुनिकता की धारा के साथ आगे बढ़ाया और उसे विश्वकला में पटल पर लाया। इन कलाकारों ने भारतीय शैली के साथ अनेक प्रयोगवादी शैलियों और तकनीकों का संबन्ध बनाया और अपनी कला को विश्व में प्रस्तुत किया।

भारतीय कला का इतिहास यह दर्शाता है कि कला कल्चर ने हमें अपनी परंपराओं के साथ ही अधुनिकता की दिशा में आगे बढ़ने का मौका दिया है, और कलाकारों ने इसका एक सशक्त प्रतीक बनाया है। गगनेन्द्र नाथ ठाकुर ने नवयुग की कला प्रवृत्तियों को सर्वथा मौलिक ढंग से अपनाया है। उन्होनें पश्चिमी भावना और पूर्व की अंतदृष्टि को विकसित कर स्वतंत्र पद्धति पर यूरोपिय 'क्यूबिज्म' को भारतीय जामा पहनाकर प्रस्तुत किया। वे पश्चिमी पद्धति से प्रेरणा लेकर कला को आगे बढ़ा रहे हैं और उनकी कृतियों में उनके चिन्तन की स्पष्ट झलक भी मिलती है जो उनकी कृतियों में भारतीयता को दर्शाती है। कला में 'आधुनिकता' कलाकार का स्वतंत्र विचार है, यह कथन रविन्द्रनाथ ठाकुर की कला से स्पष्ट हो जाता है। उनकी कला पर यूरोपीय और समकालीन भारतीय कलाकारों का प्रभाव देखने को नहीं था। रविन्द्रनाथ ठाकुर ने अपने जीवन के संध्याकाल में कागज और कलम की भाषा को एक और रंगों और कूँची की भाषा को अपनाया और लगभग दो हजार से भी अधिक चित्र और रेखांकन बनाए। उन्होनें कला सृजन, मौलिक और स्वतंत्र चिंतन के साथ किया और अपने व्यक्तिगत सिद्धान्तों के आधार पर चित्र बनाए।

'समकालीन कला में लोक तत्व' ईश्वर चन्द गुप्ता, के द्वारा उद्धृत लोककलाएं मानव सभ्यता के विकास का जीता जागता उदाहरण है। इसकी उत्पत्ति धार्मिक भावनाओं, अंध विश्वासों, भय निवारण प्रवृत्ति और जातिगत भावनाओं की रक्षा के विचार से हुई है। इसका विकास महत्व मानव जीवन में इसलिए सर्वाधिक है कि यह सामाजिक संदर्भों को जोड़ती है और इसकी अभिव्यक्ति का आधार करूणा, स्नेह और मंगल भाव होता है। आज भारतीय संस्कृति में लोककला को विश्व में एक अलग पहचान मिली है, चाहे बिहार की मधुवनी लोकचित्र हो या बंगाल की पटुआ कला, महाराष्ट्र की बरली कला या राजस्थान की माण्डना कला, आधुनिक भारतीय चित्रकला में लोककलाओं की प्रेरणा के शुभारम्भ का श्रेय यामिनी रंजन राय को जाता है।

गीतिका गर्ग वर्तमान समय में लोककला प्रतीकों का प्रयोग कर रहीं है इन्हीं शीर्षक में भारत में अनेक प्रांतों में इसका प्रयोग मिलता है और इन सभी की अपनी एक कला है। हमारे समाज में जन्म से लेकर मृत्यु तक अनेक अनुष्ठान होते रहते हैं, जिनमें लोककला का अपना अलग महत्व है। लोक कला जनसामान्य की कला है और इसका निर्माण जन साधारण के द्वारा अधिकांशतः उत्सवों, त्योहारों, शादी विवाह आदि के अवसर पर घर की साज–सज्जा के लिए किया जाता है। लोक कला में प्रायः प्रतीकों का उपयोग होता है जो किसी लोक कथाओं, देवी–देवताओं, किवंदतियों और मिथकों को दर्शाते हैं। इन प्रतीकों के उपयोग का लक्ष्य उन चक्राकार रेखाएं, पान, आम, पीपल, सर्प, वृत्त, आयत, त्रिभुज, डमरू–नुमा त्रिभुजाकार, आयताकार मानवाकृतियाँ आदि देखने को मिलती हैं।

उपसंहार

प्रस्तुत शोधपत्र से चित्रकला में मानव मन की विशेष संवेदी स्थिति पर भी प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। आज जिस प्रकार प्रत्येक मनुष्य विश्व की प्रत्येक सूचना रखता है, उसी प्रकार कलाकार भी विश्व परिदृश्य से अपनी संवेदना जाग्रत करता है, वैचारिक सामग्री एकत्र करके अपनी चेतना से नए से नए माध्यम में, अपनी स्थानीयता के साथ स्वयं को व्यक्त करने की चेष्टा में रहता है। आज कलाकार के सामने समसामयिकी चित्रित करने के लिए विश्व के सांस्कृतिक अतीत का समृद्ध भंडार है, जिससे समसामयिक चित्रकार भी उन समृद्ध प्रवृत्तियों का धारक हो गया है। हमें यह भी देखना है कि कितने कलाकार समाज में व्याप्त बुराईयों को दूर करने हेतु उपचारात्मक कलाकृतियों के सृजन में संलग्न है किन्तु कितने सफल है, क्या वास्तव में उनकी कलाकृतियाँ विशेष संदेश देने, मन में वैचारिक क्रान्ति पैदा करने और एक विशेष शाँत वातावरण में हमें ले जाने में सफल हैं। इन सब विषयों पर विशेष शोध आज की आवश्यकता होती है। अंत में कहा जा सकता है कि कला का उद्देश्य सम्पूर्ण मानव समाज के उत्थान हेतु निर्माण करना ही कलाकार का लक्ष्य होना चाहिए।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

1. समकालीन कला, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, 2000.
2. कला, राज्य ललित कला अकादमी, उत्तर प्रदेश, त्रैमासिक अप्रैल से जून 2000.
3. कला सिद्धान्त एवं परम्परा, प्रो. बी.एल. सक्सेना, डॉ. श्रीमती सुधा सरन, डॉ.आनन्द लखटकिया, विश्वभारती कला निकेतन, नई दिल्ली, 2010.

4. सौन्दर्य, डॉ.राजेन्द्र प्रसाद, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, 2001.
5. वृहद आधुनिक कला कोश, डॉ.विनोद भारद्वाज, दिल्ली, 2015.
6. समकालीन कला सन्दर्भ तथा स्थिति, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, 1980,
7. कला इतिहास का दर्शन, ग्रन्थ शिल्पी, आर्नल्ड हाउजर (अनुवादक गोपाल प्रधान), दिल्ली 2008.
8. आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ, रा.हि.ग्र.अ., जयपुर 1995.
9. कला तथा आधुनिक प्रवृत्तियाँ, रामचन्द्र शुक्ल, लखनऊ 1988.
10. राजस्थान की मूर्तिकला परम्परा (रा.हि.ग्र.अ.) जयपुर 2001.